B.Ed. 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – Pedagogy of Social Science
Course – 7 (A) /Unit – 4(e)
Topic – निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
(Diagnostic and Remedial Teaching)
Lecture No. - 60

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from previous lecture....

उपचारात्मक शिक्षण
(Remedial Teaching)

निदान शब्द की तरह ही उपचार शब्द चिकित्सा विज्ञान से लिया गया है। जिस प्रकार चिकित्सा के क्षेत्र में निदान का स्वयं तब तक महत्व नहीं होता जब तक कि उपचार न किया जाए, उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को निदान के पश्चात यदि उपचार ना मिले तो उनपर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उपचार की अनुपस्थिति में अपनी कमियों को जानने के उपरान्त अक्सर छात्र कुंठा का शिकार हो जाते हैं। अतः आवश्यक है कि निदान के तत्पश्चात उपचार अवश्य किया जाए।

उपाचारात्मक शिक्षण के उद्देश्य
(Objectives of Remedial Teaching)

उपचारात्मक शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. छात्रों की अधिगम संबंधी समस्या को हल करना,
2. छात्रों के अन्तर्द्वन्दों का समाधान करना,
3. छात्रों की शारीरिक, भावात्मक एवं समाजिक अक्षमताओं को दूर करना,
4. छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहयोग देना,
5. छात्रों को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना,
6. छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना,
7. अधिगम के दुष्परिणामों का उपचार करना ।

उपचारात्मक शिक्षण की विधियाँ

(Methods of Remedial Teaching)

उपचारात्मक शिक्षण का प्रथम उद्देश्य छात्रों की अधिगम समस्या का हल होता है एवं अंतिम उद्देश्य स्वाम्त्व अधिगम में सहायता प्रदान करना होता है। प्रत्येक छात्र की समस्याएँ अलग-अलग होती हैं। अतः कसी एक ही प्रकार की उपचारात्मक शिक्षण विधि का प्रयोग सभी छात्रों के लिए नहीं किया जा सकता है। छात्रों की संख्या एवं समस्याओं चरित्र के अनुरूप उपचार की विधि भी बदलती रहती है। प्रमुख उपचारात्मक विधियाँ निम्नलिखित हैं -

1. **कक्षा शिक्षण (Class-Teaching)** - यदि किसी प्रकरण को समझने सभी छात्रों को कठिनाई हो रही हो तो उस प्रकरण को कक्षा में पुनः पढ़ाया जाता है। इस क्रम में श्रव्य-दृश्य सामग्री, प्रयोग, चार्ट आदि का प्रयोग प्रकरण को रूचिकर एवं बोधगम्य बनाने का पूर्ण प्रयास होना चाहिए।

2. **अनुवर्ग या प्रबोधन शिक्षण (Tutorial Teaching)** - इस प्रकार के शिक्षण में कक्षा को विभिन्न उपकक्षाओं या उपवर्गों में बाँट दिया जाता है। छात्रों के पूर्व -ज्ञान एवं कठिनाइयों के अनुरूप शिक्षक शिक्षण करता है एवं प्रत्येक छात्र की कठिनाई को हल करने की कोशिश करता है। इसके निम्नलिखित रूप हैं -

   (a) **सामूहिक प्रबोधन शिक्षण (Group Tutorial Teaching)** - इसमें एक उपकक्षा में 10 से 15 छात्र होते है। इसमें छात्रों से क्रियाएँ एवं प्रतिक्रयाएँ करवायी जाती हैं। इससे छात्रों की अभिव्यक्ति सशक्त होती है एवं उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

   (b) **व्यक्तिगत प्रबोधन शिक्षण (Indivudual Turorial Teaching)** - इस शिक्षण में छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर किया जाता है। इस शिक्षण में छात्र स्वयं की गति, योग्यता एवं क्षमता के आधार पर सीखता है।

   (c) **पर्यवेक्षण प्रबोधन शिक्षण (Supervised Tutorial Teaching)** - इस प्रकार का शिक्षण प्रतिभाशाली बालकों के लिए उपयुक्त समझा जाता है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्र समय -समय पर शिक्षक से मिलकर अपनी समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं, उनसे विचार-विमर्श करते हैं। कठिन प्रकरणों पर वाद-विवाद कराया जाता है।

(समाप्त)